बांग्लादेश का नया पैंतरा मुहम्मद यूनुस ने यूरोपीय राजनयिकों से आग्रह किया कि भारत के 'वीज़ा प्रतिबंधों' ने बांग्लादेशी छात्रों के लिए अनिश्चितता पैदा कर दी है

बांग्लादेश छीन लेगा भारत से ये बड़ी ताकत! अगर हुआ ऐसा तो गिर जाएगी पीएम मोदी की साख

● मंथन संवाददाता

नई दिल्ली। मुहम्मद यूनुस ने यूरोपीय देशों से आग्रह किया है कि वे बांग्लादेशियों के लिए अपने वीजा केंद्रों को दिल्ली से हटाकर ढाका या किसी अन्य पड़ोसी देश में स्थापित करें। यह बात स्थानीय मीडिया में आई उन रिपोर्टों के कुछ दिनों बाद आई है, जिनमें कहा गया था कि ढाका आलू और प्याज जैसे मुख्य खाद्य पदार्थों के आयात के लिए अन्य स्रोतों पर विचार कर रहा है। यूनुस ने ढाका के तेजगांव स्थित अपने कार्यालय में यूरोपीय देशों के राजनयिकों के साथ बैठक के दौरान यह अपील की। बैठक में ढाका और नई दिल्ली दोनों जगहों पर तैनात 19 से अधिक राजनयिक मौजूद थे।

यूनुस ने क्या लगाया आरोप?

उन्होंने मांग बढ़ने के लिए भारत के 'वीजा प्रतिबंधों' को जिम्मेदार ठहराया।

उन्होंने कहा, 'बांग्लादेशियों के लिए वीजा पर भारत के प्रतिबंधों ने कई छात्रों के लिए अनिश्चितता पैदा कर दी है, जो यूरोपीय वीजा के लिए दिल्ली की यात्रा नहीं कर सकते हैं।' उन्होंने आरोप लगाया कि इसके परिणामस्वरूप यूरोपीय विश्वविद्यालय प्रतिभाशाली बांग्लादेशी छात्रों से वंचित रह रहे हैं।

उन्होंने राजनयिकों से कहा, 'वीजा कार्यालयों को ढाका या किसी नजदीकी देश में स्थानांतरित करने से बांग्लादेश और यूरोपीय संघ दोनों को लाभ होगा।' ढाका ट्रिब्यून की रिपोर्ट के मुताबिक, ढाका के अधिकारियों ने बुल्गारिया का उदाहरण भी दिया, जिसने बांग्लादेशियों के लिए अपने वीजा केंद्र को पहले ही इंडोनेशिया और वियतनाम में ट्रांसफर कर दिया है। राजनयिकों ने कहा कि वे ढाका की सुधार पहल का समर्थन करते हैं और नये बांग्लादेश के निर्माण में सलाह और सहायता प्रदान करने की प्रतिबद्धता का वादा करते हैं।

यूनुस ने यूरोप से मांगी मदद:

यूनुस ने बांग्लादेश के बारे में 'व्यापक गलत सूचना' पर भी बात की और इसका मुकाबला करने के लिए यूरोपीय संघ से मदद मांगी। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना और उनके सहयोगियों पर 'देश को अस्थिर करने के लिए बड़ी मात्रा में धन शोधन' का भी आरोप लगाया। यूनुस ने बांग्लादेश में सभी राजनीतिक दलों और धार्मिक समुदायों के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करने का भी दावा किया।

भारत ने बांग्लादेश से किया ये वादा

इस बीच, बांग्लादेश ने कहा कि भारत ने बांग्लादेशी नागरिकों के लिए वीजा बढ़ाने के लिए कदम उठाने का वादा किया है। यह बयान मुख्य सलाहकार डॉ. मुहम्मद यूनुस की भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री से मुलाकात के ठीक बाद आया है। पर्यावरण सलाहकार सईदा रिजवाना हसन ने संवाददाताओं से कहा कि मिस्री ने बांग्लादेशी पक्ष से वादा किया है कि वह कदम उठाएंगे।

मौजूदा समय में भारत बांग्लादेशियों को सीमित वीजा दे रहा है। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, वे चिकित्सा और अन्य जरूरी कारणों से सीमित वीजा दे रहे हैं। विदेश मंत्रालय के अधिकारियों ने पिछले महीने कहा था, 'हम पहले से ही चिकित्सा वीजा और आपातकालीन आवश्यकताओं के लिए वीजा जारी कर रहे हैं। एक बार जब कानून और व्यवस्था की स्थिति में सुधार हो जाता है और स्थिति सामान्य वीजा परिचालन (बांग्लादेश में) को फिर से शुरू करने के लिए अनुकूल हो जाती है, तो हम ऐसा करेंगे।'

यह रिपोर्ट हमारा नहीं है, अंतरराष्ट्रीय जगत में, पूरी दुनिया में यह रिपोर्ट है

फिर उठा सोरोस-कांग्रेस के जुड़ाव का मुद्दा, रिजिजू बोले- सभापति के खिलाफ नोटिस सफल नहीं होने देंगे

● मंथन संवाददाता

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री ने कहा, हम सब लोग कसम खाकर आए हैं, शपथ लेकर आए हैं कि इस देश की स्वायत्ता को, एकता को रक्षा करने के लिए हम शपथ लेकर आए हैं। उपराष्ट्रपति के पद को, उपराष्ट्रपति की गरिमा पर अगर आप लोग हमला करेंगे तो हम बिल्कुल उनका बचाव करेंगे और आप लोगों का जो इरादा है, उसे हम कामयाब नहीं होने देंगे।

राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ के खिलाफ विपक्ष की तरफ से पेश किए गए अविश्वास प्रस्ताव पर 11 दिसम्बर को भाजपा आक्रामक तेवर में दिखी। पार्टी के नेता किरेन रिजिजू ने विपक्ष पर हमला बोलते हुए कहा कि वह उपराष्ट्रपति के खिलाफ एजेंडे को सफल नहीं होने देंगे। केंद्रीय मंत्री ने एक बार फिर सदन में अरबपति जॉर्ज सोरोस और कांग्रेस के कथित गठजोड़ का मुद्दा उठाते हुए सोनिया गांधी और विपक्षी दलों पर आरोप लगाए।

क्या बोले किरेन रिजिजू?

रिजिजू ने राज्यसभा में कहा, मैं एक बहुत ही गंभीर विषय पर दुख के साथ खड़ा हो रहा हूं। इस बीच विपक्ष के कुछ सांसदों ने कहा कि हमने अविश्वास प्रस्ताव पेश किया है। इस पर धनखड़ ने भी बीच में टोकते हुए कहा कि मुझे नहीं पता कि आप किसे बचा रहे हैं।

इसके बाद रिजिजू ने विपक्ष को घेरते हुए कहा, भारतीय लोकतंत्र में 72 साल बाद एक ऐसा किसान का बेटा उपराष्ट्रपति के पद पर पहुंचकर देश की सेवा का काम किया है। इस राज्यसभा सदन के सभापति के रूप में पूरा देश देख रहा है कि उपराष्ट्रपति ने कैसे इस सदन की गरिमा को रखा है। हम शुरू से देख रहे हैं कि विपक्ष के लोग न लोकतंत्र को मानते हैं और न ही सभापति की गरिमा का ध्यान रखते हैं। आप लोगों ने, मैं नाम लेकर कह सकता हूं कि आपने बाहर टीवी पर पब्लिक के सामने उपराष्ट्रपति का नाम लेकर बेमतलब के आरोप लगाते हैं। आप इस सदन के सदस्य होने के लायक नहीं हैं। आप इस सदन के सदस्य होने का कोई अधिकार ही नहीं रखते हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा, हम सब लोग कसम खाकर आए हैं, शपथ लेकर आए हैं कि इस देश की स्वायत्ता को, एकता को रक्षा करने के लिए हम शपथ लेकर आए हैं।

ऑपरेशन लोटस बीजेपी का दावा है कि कांग्रेस और एनसीपी के नेता उनके संपर्क में हैं

फडणवीस दिल्ली में, उधर महाराष्ट्र में 'ऑपरेशन लोटस' की चर्चा, टेंशन में राहुल गांधी-शरद पवार की पार्टी

● मंथन संवाददाता

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस 11 दिसम्बर शाम अचानक दिल्ली पहुंचे। गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात की। माना जा रहा है कि फडणवीस मंत्रालयों के बंटवारे को लेकर शाह को जानकारी देने के लिए पहुंचे हैं। उधर, महाराष्ट्र में 'ऑपरेशन लोटस' की चर्चा है। महाराष्ट्र बीजेपी अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने दावा किया कि महाविकास अघाड़ी के कई सांसद और विधायक उनसे संपर्क कर रहे हैं और अपनी पार्टी से नाराजगी जता रहे हैं। दावा तो ये भी किया जा रहा है कि राहुल गांधी और शरद पवार की पार्टी के कई विधायक बीजेपी में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, कांग्रेस ने इन दावों को खारिज कर दिया है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले ने कहा, बीजेपी ऐसी बेतुकी कोशिशें करती रहती है। हमारा कोई भी नेता कहीं भी जाने वाला नहीं है।

महाराष्ट्र बीजेपी अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा, एमवीए के नेता खुद अपनी बेचैनी जाहिर कर रहे हैं और कई लोग पाला बदलने के लिए भाजपा के संपर्क में हैं। हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस, उद्धव ठाकरे की शिवसेना और शरद पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी ने सिर्फ 46 सीटें जीती हैं। जबकि बीजेपी, शिवसेना और अजित पवार की एनसीपी ने 230 सीटों पर कब्जा जमाया है। चुनाव नतीजों ने एमवीए विधायकों के सत्तारूढ़ गठबंधन में जाने की अटकलों को हवा दे दी है।

बीजेपी का दावा-खुद संपर्क कर रहे नेता

बावनकुले ने कहा, एमवीए के नेताओं को पार्टी बदलने के लिए मनाने का हमने कोई प्रयास नहीं किया है। बीजेपी के विकसित भारत विजन से जुड़ने के लिए कई नेताओं ने इच्छा जताई है, हम उनका स्वागत करने के लिए तैयार हैं। जवाब कांग्रेस के नाना पटोले ने दिया। उन्होंने कहा-बावनकुले का दावा जवाब देने लायक नहीं है। महाराष्ट्र के सभी कांग्रेस सांसद पार्टी के साथ हैं। हम नागपुर में महाराष्ट्र विधानमंडल के आगामी शीतकालीन सत्र में महायुति की वास्तविक स्थिति दिखाएंगे।

बेचैनी की वजह: इससे पहले, भाजपा नेता प्रवीण दारेकर ने संकेत दिया कि विकास अगर उनकी प्राथमिकता है तो शरद पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी के कुछ सांसद पाला बदलकर बीजेपी में शामिल हो सकते हैं। दारेकर ने कहा कि महाविकास आघाडी के कई सांसद, खासकर एनसीपी (एसपी) के उन निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं जहां भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन ने विधानसभा चुनावों में सबसे अधिक सीटें जीती हैं। अगर विकास उनकी प्राथमिकता है, तो वे अपने राजनीतिक भविष्य पर सावधानी से विचार कर सकते हैं।

केबल नेटवर्क के साथ अपने कॅरियर की शुरूआत करने वाले रोनी स्क्रूवाला यूटीवी मीडिया समूह के संस्थापक

रोनी स्क्रूवाला यूटीवी मीडिया समूह के संस्थापक और पूर्व सीईओ हैं। टेलीविजन की दुनिया में रोनी स्क्रूवाला का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं हैं। उन्होंने अपने कॅरियर की शुरूआत केबल नेटवर्क के साथ किया। इसके बाद उन्होंने टीवी सीरियल के निर्माण में कदम रखा और फिर फिल्म प्रोडक्शन और डिस्ट्रीब्यूशन से भी जुड़ गए। रोनी ने मनोरंजक प्रधान और अलग तरह की फिल्में चुनी और नए दौर की फिल्मों में अहम भूमिका निभाने के साथ विश्व सिनेमा बाजार में भी एक अलग स्थान प्राप्त किया।

अच्छी विषय वाली फिल्मों को बनाकर उनके प्रोडक्शन हाउस ने भारतीय और वैश्विक बाजार में अपने लिए खास जगह बना ली। उसके बाद रोनी ने अंतरराष्ट्रीय मीडिया दिग्गजों जैसे वॉल्ट डिज्नी, फॉक्स सर्चलाइट, सोनी और ओवरब्रुक एंटरटेनमेंट के साथ भागीदारी किया जो उनके प्रोडक्शन हाउस को नयी ऊँचाइयों तक ले जाने और उसके अंतरराष्ट्रीय पहुंच का विस्तार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। रोनी स्क्रूवाला का जन्म 8 जून 1956 को मुंबई के एक पारसी परिवार में हुआ। उनके पिता ब्रिटिश फर्म 'जेएल मोर्रिसन एंड स्मिथ एंड नेफ्यू' में एक एग्जीक्यूटिव

के तौर पर कार्य करते थे। स्क्रूवाला ने कैथेड्रल एंड जॉन कोनन स्कूल और स्प्देन्हम कॉलेज से शिक्षा ग्रहण की। स्कूल और कॉलेज के दिनों में स्क्रूवाला को थिएटर से काफी लगाव था और उन्होंने बॉम्बे थिएटर के कुछ प्रसिद्ध हस्तियों जैसे पर्ल और अलेक पदमसी के साथ नाटकों में काम किया।

रोनी स्क्रूवाला ने अपने कैरियर की शुरुआत वर्ष 1981 में मुंबई में एक केबल टीवी नेटवर्किंग कंपनी की स्थापना करके किया। इस केबल सेवा के माध्यम से फिल्मों को तीन घंटे तक निर्बाध देखा जा सकता था। यह सेवा मात्र 200 रुपये के मासिक शुल्क पर मुंबई के कफ परेड, जो एक संपन्न इलाका माना जाता है, स्थित घरों तक ही सीमित था। एक छोटी सी अवधि में ही यह सेवा बहुत लोकप्रिय हो गयी और क्षेत्र के निवासियों में इसकी मांग लगातार बढ़ती गई। इस उद्यम ने रोनी को भविष्य के व्यवसायों के लिए पर्याप्त पूंजी प्रदान की। जल्द ही रोनी की कंपनी विज्ञापन और फ़िल्मों का निर्माण करने लगी और भारत के एकमात्र राष्ट्रीय नेटवर्क दूरदर्शन पर एयरटाइम की बिक्री करने लगी। इसके बाद रोनी टीवी धारावाहिकों के निर्माण के क्षेत्र में कूद गए और 'लाइफलाइन'और 'शांति' जैसे लोकप्रिय टीवी सीरीज दर्शकों के सामने लाये। वर्ष 1990 में उन्होंने यूटीवी सॉफ्टवेयर कम्युनिकेशंस की स्थापना की। यह कंपनी फिल्मों, टीवी के कार्यक्रमों और वेब कंटेंट के उत्पादन और वितरण के काम में जुट गयी। यह प्रोडक्शन हाउस वर्ष 1996 में फिल्म वितरण पर अपना ध्यान केंद्रित करने लगा और एक वर्ष बाद अपनी पहली गति फिल्म 'दिल के झरोखे में' का प्रोडक्शन किया। इसके बाद,रोनी ने टेलीविजन प्रसारण के क्षेत्र में प्रवेश करने का फैसला किया और बच्चों के टीवी चैनल 'हंगामा' का शुभारंभ किया। यहचैनल जापानी एनिमेटेड शो और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के शोज दिखाता है।

तुर्की ने सीरिया के घटनाक्रम में निभाई है अहम भूमिका

इस्लाम, सीरिया, अफ्रीका... दुनिया में नया ऑटोमन साम्राज्य खड़ा करना चाहते हैं तुर्की के 'सुल्तान' एर्दोगन, समझें खलीफा का प्लान

● मंथन विदेश ब्यूरो

अंकारा। तुर्की पर दुनिया का ध्यान एकाएक बढ़ गया है। इसकी वजह सीरिया में असद परिवार के पांच दशक पुराने शासन का खत्म होना है। सीरिया में हुए सत्ता परिवर्तन में तुर्की की अहम भूमिका है। कमजोर अर्थव्यवस्था और घरेलू अशांति के बावजूद तुर्की वैश्विक भूराजनीति में बड़ी भूमिका निभा रहा है। उत्तरी अफ्रीका में लीबिया, भूमध्य सागर में साइप्रस, सीरिया और उत्तरी इराक से लेकर आर्मेनिया और अजरबैजान तक तुर्की ने अपना प्रभाव दिखाया है। तुर्की ने हालिया वर्षों में दुनियाभर में अपने रणनीतिक निशान छोड़े हैं। ऐसा कर तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन खुद को सुन्नी दुनिया के नेता के तौर पर दिखा रहे हैं। साथ ही वह %ग्रेटर तुर्की% के पुनरुत्थान की बात कह रहे हैं।

यूरेशियन टाइम्स की रिपोर्ट कहती है कि तुर्की की सर्व-इस्लामी और नई तुर्क विचारधारा पश्चिम एशिया, पूर्वी भूमध्यसागरीय दुनिया, उत्तरी अफ्रीका, पाकिस्तान, दक्षिण-पश्चिमी चीन और मलेशिया तक महसूस की जा रही है। सीरिया और इराक में तुर्की की भागीदारी छिपी नहीं है। एर्दोगन ने खुद एख बयान में कहा था सीरिया में इदलिब, हमा, होम्स, के बाद दमिश्क टारगेट है।

सऊदी की जगह लेना चाहता है तुर्की

सऊदी अरब कई वर्षों तक इस्लामी दुनिया का अगुआ रहा है। पिछले दो दशकों के दौरान तुर्की ने दुनियाभर में सर्व-इस्लामवाद में सऊदी अरब का स्थान लेने की कोशिश की है। तुर्की लैटिन अमेरिका से लेकर यूरोप, अफ्रीका और एशिया तक मस्जिदों के निर्माण का वित्तपोषण कर रहा है। तुर्की इमाम हतीप की विचारधारा के जरिए धार्मिक शिक्षा का अंतरराष्ट्रीय केंद्र भी बना रहा है। इन कदमों के जरिए तुर्की खुद को 'सुन्नी वर्ल्ड' के लीडर के तौर पर स्थापित कर रहा है। साल 2016 में रिज प्रांत में रेसेप तईप एर्दोगन विश्वविद्यालय में बोलते हु एर्दोगन ने तुर्की की नव-तुर्क महत्वाकांक्षाओं को उजागर करते हुए कहा था कि हम सीमाएं नहीं खींचने की अनुमति नहीं देते हैं। एर्दोगन ने 1923 की लॉजेन संधि की आलोचना की है, जिसने आधुनिक तुर्की की सीमाओं को तय किया था। एर्दोगन का कहना है कि 1914 में 2.5 मिलियन वर्ग मीटर का तुर्की लॉजेन संधि से घटकर 780 हजार वर्ग मीटर हो गया। हम इसे स्वीकार नहीं करते। ये स्वीकार करना सेल्जुक और ओटोमन अतीत को भुला देना है। ऐसा कर वह फिर से ऑटोमन साम्राज्य खड़ा करने का संकेत भी दे रहे हैं।